Vol 3 Issue 10 Nov 2013

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume-3, Issue-10, Nov-2013
ISSN 2230-7850

Available online at www.isrj.net

गुप्तजी की यशोधरा में पल्लवित सामजिक दृष्टिकोण

टी. श्रीनिवासुलु
प्राचार्य, यस.बी.महाविद्यालय, अनंतपुरमु, आन्ध्रपदेश.

सारांश :यशोधरा देवदह के महाराजा दंडपाणि की पुत्री है । परिणय के लिय आयोजित महोत्सव में कपिलवस्तु के राजकुमार सिध्दार्थ सभी राजकुमारियों में यशोधरा को सर्वश्रेष्ठ मानकर परिणय कर लेते हैं । यशोधरा का जीवन सुखमय रहा । उनको एक पुत्र भी होता है । लेकिन अपने नेत्रों से जरावस्था को देख कर खिन्न हो जाते है सिध्दार्थ विश्व में प्राप्त विपुल वित का स्वेच्छा परित्याग कर वीतराग हो जाते है । अमिताभ की इस प्रयाण को महाभिनिष्क्रमण कहते है । यशोधरा के अबला – जीवन की कहानी यहीं से आरंभ होती है ।

प्रस्तावना :

गुप्तजी की यशोधरा सकल सद्गुणों सें सुसज्जित आधुनिक भारतीय नारी के लिये एक उदाहरण बन सकती है । यशोधरा स्वयं एक क्षत्राणी की भॉति अपने पति को स्वयं सुसज्जित कर रण में भेज सकती है । वह पतिपरायणा सती धर्म का पालन करती है । पति के उद्देश्यों की पूर्ति करना अपना कर्तव्य मानती है । वह अपने के सुख दुःख मे हर पल साथ देना चाहती है ।

स्वयं सुसज्जित करके क्षण में, प्रयतम को, प्राणों के पण में
हमी. भेज देती हैं रण में, क्षात्र – धर्म के नाते ।(1)

भारतीय संस्कृति के अनुसार पति–पत्नी दोनों को अपने कर्मों में एक दूसरे का साथ लेना चाहिए । उस माननी के हृदय में इस बात पर दुःख होता है कि उसके पति उससे बओले बिना चले गये । अपने पति के इस प्रकार चोरी–चोरी चले जाने से वह अधिक व्याकुल होती है ।

सिद्दि – हेतू स्वामी गये, यह गौरव की बात,
पर चोरी– चोरी गये, यही बडा व्याधात ।(2)

यशोधरा वैदिक संप्रदायों का अनुसरण करती हुई आधुनिक भावों के साथ आदर्श पत्नी का स्थान प्राप्त करती है । वह पति के उद्देश्य की पूर्ति के लिए कर्तव्य के पथ पर कठोर बन कर चलती है । वह अपने पति के विरुद्द कुछ भी करना नहीं चाहती है ।

तात, सोचे क्या गये वे इस अर्थ है?
खोज हम लावें उन्हें क्या वे असमर्थ थे ?(3)

पति वियोग में वह व्याकुल होती हुई भी मातृत्व का कर्तव्य नहीं भूलती है । यशोधरा में पलायनवाद के लक्षण कदाचित नहीं है। आधुनिक नारी के लिए वह प्रेरणा देती है । मरण सदृश्य विरह पीडा में भी अपना कर्तव्य नहीं भूलती है । वह समस्या से पीछे नहीं हटती । पुश्प से भी मृदुल सुकुमारी यशोधरा वीर क्षत्राणी के रूप में वंश की लाज बचाने हेतु वज्रादपि कठोर बन जाती है ।

अब कठोर हो वज्रादपि ओ कुसुमादपि सुकुमारी,
आर्य पुत्र दे चुके परीक्षा, अब है मेरी बारी ।(4)

यशोधरा वैष्णव धर्म का अनुपालन करनेवाली भारतीय नारी है । गॉधी विचारधारा का अभिमत भी यही है । वैदिक संस्कृति के अनुसार गृहस्थ धर्म श्रेष्ठ माना जाता है । स्वयं गॉधीजी गृहस्थ धर्म का पालन कर समाज सेवा में जुट गये । गुप्तजी भी गॉधीवादी से समंचित गृहस्थ धर्म का पालन यशोधरा से करवाते है । अर्द्धांगिनी को विषय मात्रा के लिए प्रयुक्त करना यशोधरा के विचार में अत्यंत हेय है । आधुनिक युग में भी कुछ पुरुष पत्नि को सिर्फ विषय वासनाओं के लिए ही मानते है । ऐसे पुरुषों के लिए यशोधरा विरोध प्रकट करती है ।

मै इंन्द्रियासक्ति पर वे कब ये विषयों के चेरे,
आदि मेरे अर्द्धांगिनी भाव, क्या विषयों मात्र ये तेरे है ।
अपने अंचल में किसने ये अंगार बिखरे ।(5)

यशोधरा अनुभव करती है कि– यदि सिद्दार्थ ने नारी को भोगिनी के रुप में देखा है तो उससे संपूर्ण नारी जाति का ही अपमान हुआ है । इससे नर के साथ सहधर्मिणी व सध्योगिनी होकर पति के जीवन यज्ञ में आहुति देने के लिये उद्यत आदर्श नारी की मनोवृत्ति यशोधरा में सप्राण हो उठी है । वह जीवन में समानाधिकार एवं समान अवसर प्राप्त करने वाली आधुनिक स्वतंत्र नारी की प्रतीक है ।

सिद्दि मार्ग की बाधा नारी । फिर उसकी क्या गति है ।
पर उनसे पूछॅू क्या, जिनको मुझ से आज विरति है ।(6)

आधुनिक नारी के लिए यशोधरा का चरित्र अनुसरणीय है । राग–द्वेश, मंगल व अमंगल, संयोग व वियोग और जन्म–मरण आदि के साथ पति की जीवन संगिनी बननेवाली हर नारी मानिनी होती है और होनी चाहिए । यशोधरा का यह मान अपने लिए नहीं होता । अपने में स्थित प्रेम को दिव्य सम्मान देने के लिए वह मान करती है । नारी को स्वाभिमान होना आवश्यक है । वह अबला के रुप में निस्सहाय हो कर पुरुष के दासी बनकर रहना नहीं है । स्वावलंबी बनकर प्रेम करना नारी के लिए शोभा देती है । प्रेम गर्विता गोपा का मान हिम से भी अधिक उज्ज्वल एवं हिमालय से अधिक ऊॅचा गौरवशाली है । यशोधरा कठिनावस्था में भी अपना माननी स्वभाव नहीं त्यागती । सत्य के लिए वह निरंतर प्रयत्नशील है और समस्त संसार को बता देना चाहती है कि नारी जाति कितनी स्वामिनिष्ठ होती है ।

आधुनिक नारी भी इस प्रकार की सम्मान से जीना है ।
(7)यशोधरा ममतामयी की प्रतिमूर्ति है । गुप्तजी यशोधरा के माध्यम से नारी जीवन के समग्र रुप को प्रस्तुत करते हुए कहते है – अबला जीवन, हाय तुम्हारी यही कहानी
ऑचल में है दूध और ऑखो में पानी ।

अबला जीवन की युग – युग कहानी को गुप्तजी ने केवल दो पंक्तियों में परंतु अत्यन्त पावन एवं विश्वरक्षिका कोमल शक्ति के रुप में अभिव्यक्त किया है । नारी विरह से तत्पर हो कर अश्रुजल का दान देती है और ऑचल के दूध से स्वयं क्षीण हो कर अपनी संतान को पुष्ट बनाती है । विरह और वात्सल्य से संपन्न यशोधरा में इस तरह शील और सौन्दर्य का बडा मर्मस्पर्शा निरुपण हुआ है । आधुनिक युग की नारी शारीरिक रुप से कोमल होती जा रही है । लेकिन मानसिक रुप में और उदात्त गुण प्रज्ञत करनी चाहिए । नारी हृदय के उदार, दान, त्याग एवं ममत्व की भावना, लज्जा और स्वाभिमान को प्राप्त करना है ।

यशोधरा पतिपरायणा ही नहीं, सर्व शुभ कामना मन में रखनेवाली भारतीय आदर्श नारी है । वह समाज के हित में अपना हित देख पाती है । वह अपने पति की विश्वमानव प्रेम भावना में स्वयं समा जाती है । यशोधरा को पति के निश्कासन का दुःख इतना नहीं होता जितना कि पति के चुपचाप चले जाने का होता है ।

अगर भगवान गौतम संसार के दुःखों को मिटाने यशोधरा से कहकर जाते तो वह अत्यंत आनंद के साथ पति को लोक सेवार्थ कार्यरत होने देती । वह

अपने पति से सबके दुःख निवारण करने की आग्रह करती है ।
जाओ नाथ । अमृत लाओ तुम मुझ में मेरा पानी ।
उनके श्रम के फल सब भोंगे यशोधरा की विनय यही ।

आधिुक युग में बढती हुइ स्वार्थभावना को यशोधरा अपने व्यक्तित्व से बदल सकती है । आधुनिक युग के माता के लिए यशोधरा सांप्रदायिक रुप से प्रेरणा देती है । गॉंधीवाद से समंचित विश्वमानव प्रेम भावना यशोधरा के शब्दों में अधिव्यंजित होता है । वह अपने पुत्र को सुयोग्य बनाकर इस संसार के हेतु समर्पित करना चाहती है । आजकल प्रादेशिक भावनाए देश को जकड रहे है । यशोधरा सारा विश्व अपना परिवार मानती है । विश्वमान प्रेम का परिचय अपने पुत्र राहुल को करवाती है । सीमा रहित प्रेम भावना को वह व्याप्त करना चाहती है । सारा विश्व जिनकी कुटुम्ब है । उन्हे जन्मभूमि का बंधन कैसे बॉंध सकता है ? वह एक माता के रुप में पुत्र को उपदेश देती है कि पुरूशों के लिए स्वावलंबी होना ही उचित है । दूसरों का भार बनना अपने पौरुष का अनादर करना है । यशोधरा से हम यह भी सिखते है कि हमारा कोई साथी हमसे अधिक योग्यता दिखावे तो वह तो हमारे लिए उत्साह की बात होनी चाहिए । हमारे सामने जो आदर्श हों, हमें उनसे आगे जाने का उद्योग करना उचित है । इतना ही नही इसी प्रकार हमारा उदाहरण स्वयं दे कर दुसरों को भी साहस दिलाना चाहिए । यशोधरा दुःखिनी होकर भी गौरवशाली, पवित्र और पावन है । आधुनिक नारी यशोधरा का अनुसारण – अनुकरण कर अपने व्यक्तित्व को उज्व बना लेना है । आधुनिक नारी के लिए बनाव श्रृंगार ज्यादा शोभा नही देती है उसके उत्तम लक्षण उसके लिए कल्याणकारी होते है ।

यशोधरा में समाज सुधार के लिए आवश्यक गुण है । वह वैशणव एवं वैदिक संस्कृति से प्रभावित होकर उत्तम आचरण करती है । वह सामाजिक चेतना लाने का कार्यक्रम प्रथम अपने में आरंभ कर बाद में पुत्र को इसीके अनुरुप शिक्षा–दीक्षा देती है । आधुनिक युग में नारी अपने पुत्र को उत्तम बनाना चाहती है, लेकिन वह उसे उस प्रकार होने नही दे रही है । हर माता को समाज सुधार के लिए एक शिवाजी या महात्मा गॉंधि चाहिए । लेकिन वह शिवाजी या गॉंधी अपने घर में जन्म न ले यह स्वार्थ चिंतन रहने से समाज की यह दुस्थिति है । यशोधरा अपने पुत्र राहुल को कर्तव्य निष्ठा, स्वावलंबन, त्याग, अतिथिधर्म, गुरु भक्ति, तप उपवास, शम–दम, राष्ट्रीयता, विश्व प्रेम से परिचय करवाती है । इन सभी को स्वयं अपना कर पुत्र को भी अपना ने उपदेश देती है । डॉ. रामेश्वर लाल खण्डेलवाल कहते है – गुप्तजी ने यशोधरा में राहुल को आलम्बन बनाकर वात्सल्य प्रेम की व्यंजना में खूब ही अवसर निकाल लिया है ।(9) गुप्तजी ने यशोधरा के चरित्र में सामाजिक चेतना से समंचित स्वाभिमान, त्याग, सहनशीलता, श्रद्द, वात्सल्य, प्रेम, कर्तव्य निष्ठा आदि गुणों का सुन्दर समन्वय किया है।

यशोधरा को अंधकार की गहन गुफा से शुभ्रलोक में लाने का श्रेय गुप्तजी को ही है । यशोधरा का मातृरुप इस काव्य में पत्नी के रुप से अधिक भव्य तथा उच्च है । आधनिक नारी इस पुनीत पावन चरित्र से प्रेरणा पाना अनिवार्य है । नारी चिनत्न जीवन की ज्योति है । आधुनिक नारी में प्रेरणा और शक्ति की सर्वांगणी विकास से ही यह सुलभ है ।

Key Words
यशोधरा
स्वावलंम्बन
कर्तव्य निष्ठा
विश्वमानव प्रेम
प्रेरणा प्रदायनी

ग्रन्थ सूचि :–

1.यशोधरा – मैथलीशरण गुप्त – पृ. 21, साकेत प्रकाशन, सं – 1979
2.यशोधरा – मैथलीशरण गुप्त – पृ. 21, साकेत प्रकाशन, सं – 1979
3.यशोधरा – मैथलीशरण गुप्त – पृ. 21, साकेत प्रकाशन, सं – 1979
4.यशोधरा – मैथलीशरण गुप्त – पृ. 21, साकेत प्रकाशन, सं – 1979
5.यशोधरा – मैथलीशरण गुप्त – पृ. 21, साकेत प्रकाशन, सं – 1979
6.यशोधरा – मैथलीशरण गुप्त – पृ. 21, साकेत प्रकाशन, सं – 1979
7.यशोधरा – मैथलीशरण गुप्त – पृ. 21, साकेत प्रकाशन, सं – 1979
8.यशोधरा – मैथलीशरण गुप्त – पृ. 21, साकेत प्रकाशन, सं – 1979
9.आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य – डॉ. रामेश्वर लाल खण्डेलवाल पृ. 283

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,
We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net